भजन

पत्री आई है –आई है पत्री आई है
हादी का पैगाम हम मोमिनों के नाम
धनी की चिट्ठी आई है पत्री आई है

1 ऊपर तो प्रणाम लिखा है, अन्दर ये पैगाम लिखा है
लज्जा का सिर भानने वालो, मेंहदी का थाना थापने वालो
मोमिनों में सिरदार बने तुम, आपोपा सब वार गए तुम
झूठे कबीले छोड़ गए तुम, आंख दज्जाल की फोड़ गए तुम
कौल निभाते है वोह आशिक होते हैं
धनी उनके सिर पर होते हैं

2 तुम लाहूत की हो लाडलियां, याद करो धाम की गलियां
भूल गई तुम हम नहीं भूले, सातवीं भोम के झूले हिडोंले
याद करो वोह खूबखुशाली, दे दे कर दौड़ी थी ताली
अर्श भी सूना फर्श भी सूना, माया का ये एक निमूना
प्याला छूटा –– छूटा साकी
ये माया फिर भी है बाकी

3 मैं तो यहां हूँ मेरा क्या है,पर यहां धर्म का काम रूका है
अपने धनी की कर लो सेवा, रहनी में मिलता है मेवा
तुमको हमने खेल दिखाया, देखी तुमने झूठी माया
इक इक रूह को बोले आजा, इस नासूत को छोड़ के आजा
रबद जो तुमने की न होती, सैंयो जुदाई भी न होती
कौल निभाते हैं जो आशिक होते हैं
धनी उनके सिर पर होते हैं